वैज्ञानिक क्या आजकल कम पढ़ते हैं?

अमरीकी विश्वविद्यालयों में कार्यरत शोधकर्ताओं की पठन सम्बंधी आदतों के एक अध्ययन में पता चला है कि आजकल वैज्ञानिक पहले से कहीं कम शोध आलेख पढ़ते हैं। यह निष्कर्ष पिछले वर्षों के आंकड़ों से तुलना के आधार पर निकाला गया है।

इस तरह के सर्वेक्षण व अध्ययन का सिलसिला 1977 में शुरू हुआ था। इस अध्ययन की मुखिया कैरोल तेनोपिर और उनके साथी डोनाल्ड किंग ने सबसे पहले 1977 में वैज्ञानिकों को एक प्रश्नावली भेजी थी जिसमें उन्हें यह बताना था कि पिछले माह उन्होंने कितने विद्वत्तापूर्ण आलेख पढ़े थे। साथ ही आखरी पढ़े हुए आलेख के बारे में जानकारी देने को भी कहा गया था। उस प्रश्नावली के उत्तरों से पता चला था कि यूएस के शोधकर्ता प्रति माह 12-13 आलेख पढ़ते हैं और वे प्रति आलेख औसतन 48 मिनट लगाते हैं।

इसके बाद यह सर्वेक्षण थोड़े-थोड़े समय के अंतराल पर लगातार किया गया है। 1980 व 1990 के दशकों में वैज्ञानिकों ने जो जवाब दिए उनसे पता चलता था कि वे ज़्यादा आलेख पढ़ रहे हैं मगर प्रत्येक आलेख पर औसतन कम समय लगा रहे हैं।

फिर 2005 में तेनोपिर व किंग द्वारा भेजी गई प्रश्नावली के जवाबों से आलेख पठन में स्पष्ट गिरावट नज़र आई। शोधकर्ताओं के जवाबों से पता चला कि वे प्रति माह मात्र 27 विद्वत्तापूर्ण आलेख पढ़ रहे थे और प्रत्येक आलेख पर मात्र 32 मिनट का समय लगाते थे। और अब 2012 के नतीजे दर्शा रहे हैं कि आलेखों की संख्या घटकर 22 आलेख प्रति माह रह गई है।

तेनोपिर टेनेसी विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंफर्मेशन एंड कम्यूनिकेशन स्टडीज़ से सम्बंद्ध हैं। पठन आदतों में इस गिरावट की व्याख्या वे कई तरह से करती हैं। एक तो उन्हें लगता है कि हाल के वर्षों में जानकारी के कई स्रोत उभरे हैं और इस वजह से हो सकता है कि शोधकर्ताओं को विस्तृत आलेख पढ़ने के लिए समय न मिलता हो।

अध्ययन से एक बात यह भी पता चली है कि शोधकर्ता आजकल आधे से ज़्यादा आलेख तो कंप्यूटर के स्क्रीन पर पढ़ते हैं जबकि 2005 में मात्र 20 प्रतिशत आलेख ही स्क्रीन पर पढ़े जाते थे। अलबत्ता, आज भी 60 वर्ष से ज़्यादा उम्र के वैज्ञानिक 58 प्रतिशत आलेख कागज़ पर ही पढ़ते हैं। प्रायः ऐसा माना जाता है कि जब आप कागज़ पर छपी चीज़ को पढ़ते हैं तो ज़्यादा सावधानी से पढ़ते हैं। डिजिटल रूप में आप पढ़ने की बजाय झलकियां देखते हैं। इसलिए शायद प्रति आलेख कम समय व्यतीत करते हैं। मसलन, सूचना विशेषज्ञ डेविड निकोलस का मत है कि जब आप कागज़ पर मुद्रित चीज़ को पढ़ते हैं तो कोशिश होती है कि उसे पूरा पढ़ें।

वैसे तेनोपिर का मत है कि जल्दी ही ऐसा समय आ जाएगा जब इस तरह के पठन सर्वेक्षणों का कोई अर्थ नहीं रहेगा क्योंकि परिभाषाएं तेज़ी से बदल रही हैं। जैसे 'पढ़ना' किसे कहें या 'आलेख' किसे कहें जैसी बातों के अर्थ बदलते जा रहे हैं। इसके चलते पिछले वर्षों से तुलना करना भी बेमानी हो जाता है। यह देखना रोचक होगा कि भारत में वैज्ञानिक और शिक्षकों में पढ़ने की आदतें क्या हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***